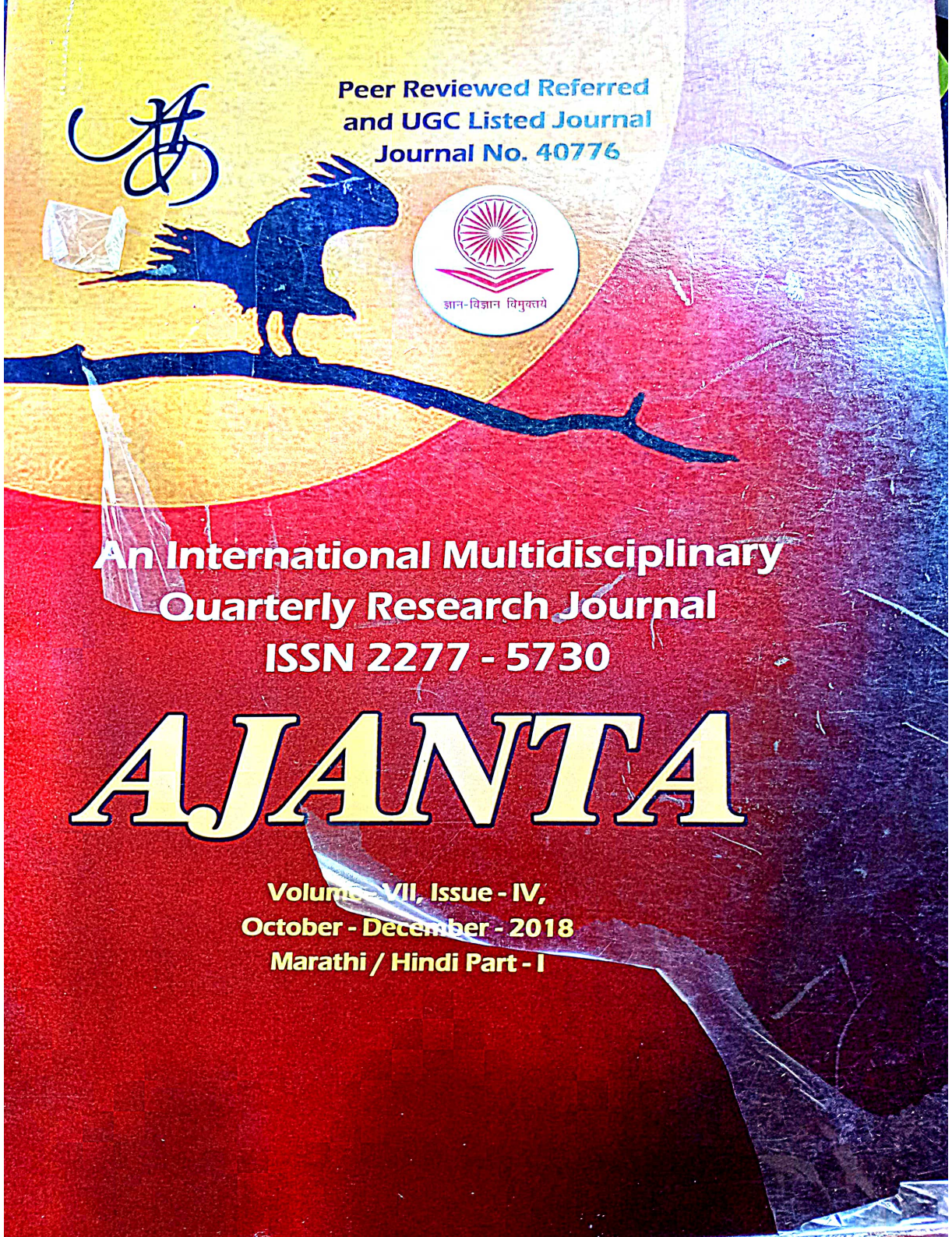

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
Journal No. 40776

An International Multidisciplinary
Quarterly Research Journal
ISSN 2277 - 5730

AJANTA

Volume - VII, Issue - IV,
October - December - 2018
Marathi / Hindi Part - I

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VII Issue - IV October - December - 2018

Marathi Part - I / Hindi Part - I

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed., M.L.A.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	श्री गुरू नानक देव जी और भक्ति साहित्य **डॉ. सोनदीप मोंगा**	१-४
२	२० वी सदी के महिला कथा साहित्य में स्त्री विमर्श **प्रा. डॉ. मालती डी. शिंदे (चव्हाण)**	५-११
३	हिन्दी साहित्य मे नारी प्रेम और सौंदर्य **सौ. अल्का एन. वानखडे**	१२-१४
४	हिंदी साहित्य में मानवीय सौंदर्य तथा प्रेम **प्रा. डॉ. वडचकर एस. ए.**	१५-१८
५	कवि डॉ. हरिवंशराय बच्चन और उनका हालावाद **प्रा. डॉ. विजया जगन्नाथ पिंजारी- शिंदे**	१९--२५
६	मणि मधुकर के नाटको में सामाजिक संवेदना **सहा. प्राध्यापक डॉ. विजय वाघ**	२६-२९
७	हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता **प्रा. डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव**	३०-३४
८	हिंदी दलित आत्मकथा में व्यक्त पीडा एवं संवेदना **प्रा. डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ**	३५-४०

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

४. हिंदी साहित्य में मानवीय सौंदर्य तथा प्रेम

प्रा. डॉ. वडचकर एस. ए.
हिंदी विभाग, कै. रमेश वरपुडकर
महा. सोनपेठ, जि. परभणी.

प्रेम और सौन्दर्य के विषय दुनिया में सबसे अधिक आकर्षक रहे है | जहाँ तक प्रेम के विषय का सवाल है उसकी कोई निश्चित सीमा नहीं होती है | इसे दो इकाइयों के बीच का लगाव या परस्पर आकर्षण के रूप में ही जाना जा सकता है | इकाइयों में दो प्रेमी, व्यक्ति और देश, व्यक्ति और समाज कोई भी हो सकता है | एक किनारे पर चाहने वाला होगा दूसरे पर जिसे चाहते है वह होगा | स्त्री -पुरूष प्रेम इस क्षेत्र का सबसे प्रमुख विषय है | आकर्षण में शरीर की केन्द्रीयता है | यहीं से शुरू होकर आकर्षण चित्तवृत्तीयों में रूपांतरित होता चला गया है | कवियो, कलाकारो, साहित्यकारों ने शरीर वर्णन को इसी लिए काफी महत्व दिया है | खुजराहों की मूर्ति कला को देख कौन कह सकता है कि कलाकार का गौरव शारीरिक संरचना के अंकन से कहीं दूर है | यह मूर्तिकला दर्शकों के भाव का रूपान्तरण है | दूसरा आधार है - भावना की सत्ता से मनुष्य और प्रकृति की रचना हुई | भावना चेतना का रूप है | चेतना अव्यक्त परमात्मा की सत्ता है | यह माया है | यह साधन है, साध्य नही प्रेम और सौन्दर्य की भावना से सृष्टि का विषय बनता है | तुलसीदास के शब्दों में "जाकीर ही भावना जैसी प्रभु मुरति देखी तिन तैसी |"[१] अब हमें विचार करना होगा कि प्रेम और सौन्दर्य की भावना का मूल कहाँ है | भारतीय संस्कृत साहित्य में कालिदास, जयदेव, विधापति, सूरदास और हिन्दी साहित्य में प्रसाद, पंत, निराला, केदारनाथ अग्रवाल की कविताएँ याद आती है | प्राचीन साहित्य में रम्भा, मेनका, उर्वशी, राधा की रचनाओं में नारी छवियाँ आदर्श है | कालिदास की काव्यरचना में दो प्रकार का प्रसंग मिलता है | एक प्रसंग सौन्दर्य का - उर्वशी का सौन्दर्य असाधारण है | कोई भी आँखवाला उसे देखकर रमता है | दृष्टि हरता नहीं, आँखे गढाए रखता है | उर्वशी की सखियाँ तो उसे रात-दिन देखती है, पर क्या उनकी आँखे तृप्त होती है | दुसरा प्रसंग राधा कृष्ण के प्रेम में तल्लीन है, यह तल्लीनता दिनोंदिन के संम्पर्क के बनी है | राधा एकान्त में भी स्मृतियों में डूबी रहती है | सखिया पूछती है "अपने प्रेम का परिचय तो दो जिसने तुम्हे भाव विव्हल बना दिया है |"[२] तब राधा कहती है "परिचय क्या दूँ, विश्लेषण करने पर मूल गायब होने का खतरा है तथा विश्लेषण न करने पर समझना कठिन है |"[३] तब लगता है की दृश्य रूपवान होता है, और दृष्टा प्रेमवान | मानव प्रेम में सौन्दर्य की भावना अनादी काल से मानव के ऱ्हदय की धडकन और रक्त की लालिमा जीवित है | कवि इस मधुर अनुभव को अभिव्यक्त करके संतोष प्राप्त करता है | दुनिया का आधे से अधिक हिस्सा सौन्दर्य का आधार बनाकर ही लिखा गया है | सौन्दर्य को कवियों ने अपने - अपने मतानुसार वस्तुगत एवं व्यक्तिगत रूप में व्यक्त करने की कोशिश की है | आदिकालीन साहित्य में सौन्दर्य अद्वितीय, अनुपम होने के अनेको उदाहरण मिलते है | आदिकाल हिंन्दी साहित्य का प्रथम चरण है | इस काल में धार्मिक तथा लौकिक साहित्य में सौन्दर्य और प्रेम अधिक मात्रा में मिलता है | आदिकालीन कवियोंने नारियों के रंग - रूपों की चर्चा को अपने काव्य का विषय ही बनवाया है | पृथ्वीराजाओं अत्यंत उच्च कोटी का इसका उदाहरण है | इसमें संयोगिता के सौन्दर्य को सुंदरता से चित्रित किया है | मानो उसके शरीर में समुद्र से निकले चौदह रत्नों को गिना है | साथ ही विद्यापति ने सौन्दर्य बोध की

परम्परा को 'गीत गोविंद ' के द्वारा आगे बढ़ाने की कोशिश की है | कविता में शब्द होते है, जो अर्थ पैदा कर मूल को पाठकों तक पहुंचाते है | शब्दों का काम है कि वे मूल का स्मृति चित्र बनाएँ, बिम्ब बनाएँ और अर्थ सम्प्रेषण करें | कविता में वर्णन का विशेष महत्व है | आज का मनुष्य इतना अहं केंन्द्रित है, उसकी गिनती करना मुश्किल कार्य है | उसमें विचारों की भरमार है, प्रेम और सौंन्दर्य का जिम्मा विज्ञापन और उपभोक्ता विभागों के पास है | कालिदास की कविताओं में शकुन्तला, दुष्यंत का प्रेम संवाद रूपाकर्षण से शुरू होता है | प्रकृति प्रेम सिध्दि में गवाह होती है | वह सजीव लगने लगती है | तारों, नदी-पर्वतों, हरी-भरी धरती के पुष्प-गुच्छों में प्रेम की लहर फैली है | कवि ऋतुओं का वर्णन करता है तो उसमें गहरा सम्बन्ध भाव रहता है | वसंत ऋतु का चित्रण-

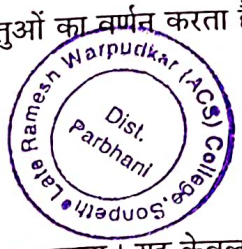

" सहकार कुसुम केसर निकर भरा मोद मूर्च्छित दिगन्ते |
मधुर मधु विधुर मधु पे मधौ भक्त कस्य नोत्कष्ठा || " [४]

पवन के झोके लताओं का लहराना, पेडों का फलों से लद-लद होकर झुकना | यह केवल मानवीकरण नही है, यह मानवीकरण मनुष्य तथा हिन्दी साहित्य की परम्परा में यह काफी दिन से चलता आ रहा है | किंतु आधुनिक काल में छायावादी कवियों ने इसकी रक्षा की है | पन्त को प्रकृतिके कवि कहा गया है | अन्य छायावादी कवियों की तुलना में पंत का काव्य व्यक्तिगत्व विकास मूल्यबोध के रूप गें गाना जाता है | छायावादी सौंन्दर्य चेतना का मुख्य आधार प्रकृति और नारी रहा है | प्रसाद की कविता में प्रेम और सौंन्दर्य सृष्टि के बीच है | उसमें सहज ऐन्द्रिक सम्बेदनाएँ है | नाटकों के पात्रों में प्रेम स्त्री पुरूष की सरहदों को छूलेती है | निराला की कविता में अनेक रूपों की सत्ता के चित्र मिलते है | गद्य में प्रेमचंद के पात्र में प्रेम संबन्धों के लिए जीवन की सक्रिय स्थितीयाँ जिम्मेदार होती हैं | अब तक प्रेम और सौंन्दर्य के वर्णन की शाखाएँ इतनी हो गयी है, स्वकीया, परकीया, शरीरी, अशरीरी, दैहिक - आत्मिक सम्बंन्धों के इतने रूपों में रचनाकार इसका निर्वाह करते हैं कि वास्तविकता को स्थिर करना कठिण लगने लगता है | ज्यादातर रचनाकार इस क्षेत्र में युवा शरीर और युवा मनकी झाँकियाँ प्रस्तुत करते है | यौवन की स्थितियों में शरीर का आकर्षण और वासनात्मक ललक प्रमुख रहती है | यह आकर्षण कभी कभार घातक होता है | केदारनाथजी की कविता इसका उदाहरण है |

" एक कली ऐसी होती है / जो अन्तस को छुलेती है |
स्वयं आप ही, और गंध से भर देती है | स्वयं आप ही / चाहे कोई रूप न माँगे, गन्ध न माँगे / तुम ऐसी ही एक कली हो |" [५]

यह कविता युवावस्था की है | रूप और गन्ध कली के गुण है | कली है तो गंध है अन्तस को छुने की बात है अन्यथा कहाँ से आयेंगे ?

" हे मेरी तुम / हम दोनों अब भोग रहे है / दीनदेह को / प्यार -प्यार से बाँधे / ढले - ढले / दिल से ढकेल ते / दिन को ठेला और रात को, काट रहे है, भीतर लौ साधे |" [६]

केदारनाथजी की इस कविता में युवावस्था में उपजा शरीर प्रेम भावना की शक्ति बना है | वह शरीर के कमजोर होने पर भी आपस में बाँधता है | इनके कविता में जीवन सहचरण की छाप है | जीवन कोई अमूर्त और निर्गुण चीज तो है नहीं | शरीर सौंन्दर्य और उसके प्रति लगाव अर्थात प्रेम आपके भीतर है | प्रेम सार्वभौमिक, सर्वकालिक, सनातन और नित्यनवीन है | जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव प्रेम को तलाशता रहता है | प्रेम के अभाव में मानव जीवन नीरस हो जाता है | बाल्यकाल

में प्रेम माता - पिता या नये - नये खिलौनों के लिए उमडता है। किशोर अवस्था में युवक - युवतियों में पारस्पारिक आकर्षण को लेकर प्रकट होता है। जो दाम्पत्य के सुत्र में बंध जानेपर आजीवन विश्वास के सुदृढ बंधन में परिवर्तित हो जाता है। प्रेम सृष्टिका चालक भी है और मुक्ति का मंन्त्र भी है। सचमुच प्रेम ही जीवन है। कबीरदास ने तो प्रेम से रहित ह्दय को शमशान कह दिया। " जा घट प्रेम न संचरे, सो घट जान मसान।"[७] प्रेम न् शब्द ही भाववाचक है। प्रेम न् शब्द की व्युत्पत्ती प्री धातु से मनिन प्रत्यय जोडने पर मानी जाती है। प्री का अर्थ है प्रसन्न करना, आनन्द लेना या आनंन्दित होना। प्रेम याने प्रीति देनेवाला। प्रेम यह शब्द अत्यंत व्यापक है, इसी व्यापकता को आधार बनाकर दार्शनिकोंने अलग - अलग रूपसे परिभाषित करने का प्रयास किया है। वाचस्पत्य कोश में " प्रेम का मजा चखने के लिए ही आत्मा एक बार फिर अस्थि पिंजर में बन्द होने को राजी हुआ है। बाह्य सौंन्दर्य किस काम का जबकि प्रेम जो आत्मा का भूषण है, ह्दय में न हो। प्रेम जीवन का प्राण है। जिसमें प्रेम नहीं, वह केवल सांस से घिरी हुई हड्डीयों का ढेर है।"[८] तो ही गेल कहता है प्रेम व्यापार के द्वारा ही अभेद की स्थिती प्राप्त होती है। प्लेटो का मानना है कि प्रेमनुभव से रहित व्यक्ति सदा अंधकार में भटकता है। स्वामी रामानंद तीर्थ ने सच्चा प्रेम सुर्य की तरह आत्मा को प्रकाश देनेवाला माना है। प्रेम का वास्तविक अर्थ सौंन्दर्य का दर्शन है। पाश्चात्य विद्वानों ने दाम्पत्य जीवन में प्रेम की संभावनाओं पर बल देकर अध्यात्म की अनिवार्यता पर बल दिया है। "यौन भावना या कामवासना मूलत: व्यक्ति विशेष का आग्रह नहीं करती परन्तु प्रेम का सम्बन्ध निश्चित रूप से व्यक्ति विशेष से ही होता है और यह मैं और तुम के बीच निश्चित भावत्मक सम्बंन्ध है।"[९] यहां प्रेमी - प्रिय - प्रेम की त्रिवेणी का संगम होकर तीनों एकाकार हो जाते है। कबीरदास और कृष्ण भक्त कवियों का प्रेम इसी कोटी में आता है।

कवि रविन्द्रनाथ टैगोर नं प्रेम की कल्पना कुछ इस प्रकार की है "प्रेम केवल एक भावना मात्र नहीं है, वह परमार्थ है, परम सत्य है, सृष्टी ही आनन्द प्रेरणा है, ब्रम्हा की शुभ्र ज्योति है, इसी के द्वारा हम ब्रम्हा- विहार कर सकते हैं। केवल प्रेम रहित व्यक्ति प्रेमोपहार पर भी हानि - लाभ या उपयोगिता के रूप में विचार करते हैं किन्तु यह प्रेम नही है।"[१०] दुसरे शब्दों में अगर कहा जाय तो प्रेम केवल बाह्य रूपाकृति को देखकर रीझना ही है तो वह कोरी वासना है। प्रेम एक अत्यन्त पवित्र भाव है जो शनै: शनै: आत्मिक तत्व पा लेता है।

प्रेम अत्यन्त जटिल मनोवेग है, संम्पूर्ण विश्व को इसने एक सुत्र में बांध रखा है। प्रेम के बीना जीवन की कल्पना तक नही की जा सकती। सृष्टी का प्रत्येक प्राणी प्रेम के सरस रूप का अनुभव करता है। किन्तु इस अनुभूति को व्यक्त करना कठिन है। प्रेम रूपी आकर्षक वस्तुओंसे नही हो सकता अपितु विशिष्ट वस्तु या व्यक्ति ही प्रेम का पात्र बनता है जबकि काम - भाव किसी भी वस्तु के प्रति जागृत हो सकता है और यह भाव स्वार्थ - तत्व की प्रधानता लिये है। पवित्र धर्म ग्रंथ गीता के अनुसार, "काम का धर्म से अविरोध, काम की प्रेम रूप में परिणति ही है।"[११] प्रेम यह मूल्यनिष्ठ है, कामवासना में कायिक आकर्षण का ही महत्व है। प्रेम एक अत्यंत पवित्र भाव है जिसमें स्वार्थ - भावना के लिए तनिक भी स्थान नही है। इसी पवित्रता में प्रेम के गुणों का विवेचन करना बड़ा मुश्किल कार्य होते हुए भी तुलसीदासजी ने आशा, विश्वास और भरोसा को प्रेम के गुण माना है। वे कहते है :-

"एक भरोसो एक बल, एक आस बिसवास।
एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास।"

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

तुलसीदासजीने चातक व मेघ के प्रेम के बहाने, राम के प्रति अपने प्रेम का जो वर्णन दोहावली में किया है, उससे हमें प्रेम के सब गुणों का गुच्छ मिलता है। परम उदात्त और निर्मल प्रेम की ऐसी कल्पना अन्यत्र दुर्लभ है। पपीहा आदर्श प्रेमी है और बादल आदर्श प्रेम पात्र। बादल पपीहे का एक मात्र भरोसा बल, आशा तथा विश्वास है। बादल के बरसने में चाहे उम्र बीत जाए, परन्तु प्रेमी चातक की आशा बनी रहती है। बादल का नाम रटते रटते चातक ही जीभ शुष्क हो जाती है। परन्तु उसके आदर्श प्रेम का तेज उसके शरीर को दीप्त रखता है। इस प्रेम में अनन्यता, निष्काम भावना, पवित्रता तथा भोलापन है। प्रेम तथा सौन्दर्य निरूपम में हिन्दी काव्य में जायसी का स्थान अग्रणी है। कबीर और जायसी एक दूसरे के पुरक है। सूफी कवियों के काव्य का मुख्य रस श्रृंगार है और मुख्य विषय प्रेम। पद्मावत में वर्णित प्रेम में संयोग वियोग दोनों पक्षों का अत्यंन्त व्यापक वर्णन मिलता है। पद्मावती का नख शिख वर्णन इनकी प्रतिभा का परिचायक है। कृष्ण भक्ति में सूरदास का काव्य प्रेम तथा सौन्दर्य भावना की निधि समान है। मानव ह्दय में प्रेम की जितनी भी प्रवृत्तीयाँ विद्यमान है, उन सबका वर्णन सूरकाव्य में हुआ है। रीतिकाल का प्रेम मुख्यत: ऐन्द्रिय है। इसमें प्रेम के मुख्य आलम्बन किशोर- किशोरी है। इस काल के कवियोंकी दृष्टि नायिका के सौन्दर्य पर अधिक पड़ी है। नायिकाओं के अंग - प्रत्यंग, रूप रंग, कान्ति सौकुमार्य, गष्न, आयु, चेष्टाएं, वेशभूषा, आभूषण आदि का सुक्ष्म मादक चित्र हुआ है। आधुनिक काल में छायावादी कवियों के काव्य में भाव सौंदर्य और कला सौष्ठव आपने चरमोत्कर्ष पर है।

इस प्रकार हम देखते है कि प्रत्येक युग में काव्य में प्रेम व सौन्दर्य की अभिव्यक्ति हुई है।

संदर्भ

१) तुलसीदास -
२) विद्यापति की पदावली -
३) विद्यापति की पदावली -
४) कालिदास - शकुंतला - दुष्यंत प्रेम प्रसंग -
५) केदारनाथ अग्रवाल -
६) केदारनाथ अग्रवाल -
७) कबीरदास -
८) वाचस्पत्य कोश -
९) पं. रामचन्द्र शुक्ल - चिद्रविलास -
१०) रविन्द्रनाथ टैगोर - साधना - १९४७
११) भग्वत गीता
१२) तुलसीदास

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

ISSN: 2454-5503

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

VOL. 4 NO. 6 SPECIAL ISSUE DECEMBER 2018 IMPACT FACTOR:4.197(IIJIF)

2018-2019

Special Issue On

PROBLEMS AND CHALLENGES BEFORE THE WORKING WOMEN

Guest Editor
Dr. Vasant Satpute

Associate Editor
Dr. Sunita Tengse
Assistant Editor
Dr. M. B. Patil